भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में निहित कला एवं सांगीतिक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा से चित्रकला विषय में पी - एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थी

नीतू शर्मा

निर्देशक

डॉ० विजय कुमार
ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग
कला संकाय

सह-निर्देशक

डॉ० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
संगीत विभाग
कला संकाय

ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),

दयालबाग़, आगरा

2022

शोध संकल्पना

प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता तथा कला की उत्पत्ति और विकास अनवरत रहा है। कला संस्कृति का वह महत्वपूर्ण अंग है जो मानव मन को सुंदर तथा व्यवस्थित बनाती है। मनुष्य ने अपनी आंतरिक अभिव्यक्ति को भाव-भंगिमाओं की विभिन्न मुद्राओं के द्वारा प्रकट किया है। मनुष्य ने अपनी इन्हीं भाव-भंगिमाओं एवं मुद्राओं को साकार रूप प्रदान करने के लिए कला की विभिन्न विधाओं का विकास किया।

कला के संदर्भ में धर्म का बहुत ही बड़ा योगदान रहा है। अतः विश्व की सभी कलाओं का जन्म ही धर्म के साथ हुआ है। भारतीय चित्रकला में धार्मिक भावनाएं पूर्ण रूप से समाहित हैं चित्रकला को धार्मिक महत्व के कारण ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का साधन माना गया है। भारतीय कलाओं में धार्मिक तथा दार्शनिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति सरल ढंग से की गई है और धार्मिक प्रसंगों को विस्तृत रूप से प्रतिबिम्बित किया गया है। संसार की धार्मिक विचार धाराओं ने प्रतीकों के रूप में कला को एक नया रूप प्रदान किया और प्रागैतिहासिक युग से प्राप्त प्रतीक चिन्हों को देख कर कह सकते हैं कि प्राचीन काल से ही मानवीय जातियों ने अपने जीवन में धर्म एवं कला को मुख्य आधार माना। इसके उपरांत कला और धर्म को विभिन्न रूपों एवं शैलियों में प्रतीकात्मकता के साथ साथ मूर्ति स्वरूप में निरूपित किया जाने लगा, जिसमें शिल्पकारों ने मूर्तियों को ईश्वरीय रूप प्रदान किया और मूर्तियों की मुद्राओं एवं भाव-भंगिमा को देखते हुए एक सामान्य व्यक्ति आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता की ओर अग्रसर होने लगा। मनुष्य ने प्रत्येक काल में अपने विकास के प्रयत्नों से अपने कार्यकलापों में निपुणता, कुशलता, अग्रसरता तथा विस्तीर्णता की परम सीमाओं को प्राप्त करने की चेष्टा की है जिससे उसकी सभ्यता तथा कलाओं का विकास निरंतर हुआ है । सम्पूर्ण भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में मूर्तिकला कई शैलियों में अलग-अलग रूपों में विकसित हुई यह मूर्ति शिल्प विभिन्न धर्मों जैसे- बौद्ध, जैन, वैष्णव आदि धर्मों से संबंधित हैं।

शोधार्थी के शोध का विषय "भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में निहित कला एवं सांगीतिक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन" है। कालांतर में भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत सांस्कृतिक मूल की

विपुल संपदा यथा-लघु चित्र, मुद्राएं, हथियार, भारत की विभिन्न शैलियों में बने मूर्तिशिल्प व अति महत्वपूर्ण बहुमूल्य वस्तुएं संग्रहीत है। विशेषकर इन शोध संस्थानों का सबसे बहुमूल्य भण्डार विभिन्न शैलियों में बने मूर्तिशिल्प है जो लगभग 800 की संख्या में है ।

मूर्तिशिल्पों में निहित कला और सांगीतिक तत्व उच्च कोटि के हैं इनके कला एवं सांगीतिक तत्वों के विवेचन हेतु शोधार्थी ने इन मूर्तिशिल्पों को अपने शोध हेतु चयनित किया है शोधार्थी द्वारा इस विषय के चयन का कारण इन मूर्तिशिल्पों में छिपे हुए कला एवं सांगीतिक तत्वों को प्रकाश में लाना व सभी के समक्ष उद्घाटित करना है

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोधार्थी ने अपने शोध विषय के चयन हेतु भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया है। जिससे शोधार्थी को इस विषय पर शोध कार्य करने में सहायता मिली। डॉ. वासुदेव शरण उपाध्याय की पुस्तक *'प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान संस्करण-1982'* से शोधार्थी ने प्रमुख भारतीय मूर्तिकलाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की। श्री शशि भूषण सिंह की *'सारनाथ की बौद्धिक मूर्तिकला संस्करण '2009'* से शोधार्थी ने बौद्ध मूर्तिकला के बारे में अध्ययन किया। श्री मारुति नंदन प्रसाद तिवारी की पुस्तक *'जैन प्रतिमा विज्ञान संस्करण 1981'* से शोधार्थी ने जैन मूर्तिकला के बारे में जानकारी प्राप्त की। श्री, शशिवाला की पुस्तक *'भारतीय मंदिर एवं देव मूर्तियां'* का गहन अध्ययन किया जिसमें शोधार्थी ने विभिन्न के मंदिरों एवं देव मूर्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

इस प्रकार शोधार्थी अपने शोध विषय से और अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया जैसे–पवन वीणा की पुस्तक गोयल वीणा की पुस्तक *'शिल्प रस निरूपण'* रायकृष्ण दास की पुस्तक *'भारतीय मूर्तिकला'* आदि पुस्तकों का गहन अध्ययन करके कलाओं में विकसित प्राचीन कला शैलियों के संबंध में तथा विविध धर्मों से सम्बन्धित मूर्तिशिल्पों की जानकारी प्राप्त हुई तथा इसके फलस्वरूप शोधार्थी को यह ज्ञात हुआ कि प्राचीन काल से ही मूर्तिकला कला में अपना स्थान बनाने लगी।

परिकल्पना

किसी भी शोध कार्य को करने से पूर्व शोध कार्य की सफलता हेतु परिकल्पना की आधारशिला तैयार करना अति आवश्यक होता है। जिस प्रकार किसी भवन निर्माण हेतु नींव की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार विषय पूर्ण की गई परिकल्पना हमारे शोध विषय की आधारशिला होती है। साथ ही हमारे समक्ष नवीन सूझ-बूझ प्रदान करती है। कलाओं के विविध रूप देश-विदेश के अनेकों स्थान में देखने को मिलते हैं। जो कि सदियों पुरानी कला के अस्तित्व को जीवित रखे हुए हैं, जो हमे संपूर्ण जनजीवन व संस्कृति के दर्शन कराते हैं। जिसे देख कर शोधार्थी को मूर्तिकला को और अधिक जानने की जिज्ञासा हुई इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध हेतु इस विषय को चुना। जिसमें शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में निहित सौंदर्य पक्ष का विवेचनात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न करेगी। साथ ही साथ मूर्तिकला से जुड़े विभिन्न कलाकारों के साक्षात्कार के द्वारा मूर्तिशिल्पों के बारे में जानकारी प्राप्त करेगी। स्थानीय लोगों से मिलकर जानकारी प्राप्त करेगी तथा भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में निहित कला एवं सांगीतिक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न करेगी।

उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपने शोध को आरंभ करने से पूर्व शोध के उद्देश्य का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

1. धर्म और कला के संबंध प्रस्तुत करूंगी।

2. भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों की सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश की भूमिका को नवीन रूप से सभी के समक्ष प्रस्तुत करूंगी।

3. भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों के उद्भव एवं विकास तथा उनके सौंदर्यात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करना शोधार्थी का उद्देश्य है, जो आगे शोध कार्य अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर नवीन खोज कार्य का मार्ग प्रस्तुत करेगा।

चर

1. पुस्तकें एवं ग्रंथ

2. Internet websites

3. संग्रहालयों में भ्रमण

4. संबंधित विषय के विद्वानों से साक्षात्कार

कार्यप्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प - वस्तु विश्लेषणात्मक विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान शोध प्रणाली में भारतीय मूर्तिकला में कला एवं सांगीतिक तत्वों का अध्ययन किया जायेगा

प्रदत्त संकलन

प्राथमिक एवं द्वितीयक

प्राथमिक स्त्रोत

राजकीय संग्रहालय भरतपुर (राजस्थान) में संग्रहीत मूर्तिशिल्प एवं स्थानीय लोगों से साक्षात्कार।

द्वितीयक स्त्रोत

पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं, समाचार पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट, शोध-निर्देशक के साथ विचार-विमर्श तथा संग्रहालय में भ्रमण आदि।

प्रतिदर्श

शोध के अंतर्गत 150 से 200 छायाचित्रों का चुनाव किया गया है

साक्षात्कार

विभिन्न इतिहास वक्ताओं एवं साहित्यकारों से, संग्रहालय संरक्षक व पुरातत्व वक्ताओं से एवं भरतपुर के स्थानीय लोगों से संपर्क एवं उनसे साक्षात्कार।

1 हेमेन्द्र कुमार अवस्थी,क्यूरेटर, भरतपुर राजकीय संग्रहालय, भरतपुर

2 पंडित ज्ञानेन्द्रदत्त वाजपेयी,अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त,भरतनाट्यम नृतक,भारतखण्डे संगीत संस्थान,डीम्ड यूनिवर्सिटी,केशरबाग,लखनऊ

3 डा0 आसुतोष चौरे,क्यूरेटर,इंदिरा कला संगीत विश्व विद्यालय,खैरागढ़,छत्तीसगढ़

निष्कर्ष

भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्प अपने कलात्मक एवं सौंन्दर्यात्मक स्वरुप के लिए विख्यात है। मूर्तिशिल्पों में विध्यमान कला एवं सांगीतिक तत्व इनके सौंन्दर्य को बढ़ते हैं।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

इस लघु शोध के माध्यम से शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों के धार्मिक एवं मौलिक परिवेश का आधुनिक युग में क्या योगदान है तथा इन विख्यात मूर्तिशिल्पों के सौंदर्य पक्ष एवं कलात्मक पक्ष से प्रेरित होकर शोधार्थी ने इन्हें अपने लघु शोध के विषय के रूप में चयनित किया है तथा आप सभी के समक्ष अत्यंत सुंदरता व कलात्मकता के साथ उल्लेख किया है तथा आज भी यह मूर्तिशिल्प अपने सौंदर्यात्मक स्वरूप के लिए आगे आने वाले आधुनिक कलाकारों को पूर्ण रूप से प्रेरित करते रहेंगे।

विषय सूची

भूमिका – भरतपुर राजकीय संग्रहालय का परिचय

प्रथम अध्याय – भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियों का परिचय

1.1 लघु चित्र

1.2 मूर्तिशिल्प

1.3 मुद्राएं

1.4 हथियार

1.5 अन्य कलाकृतियां

द्वितीय अध्याय – भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों का धार्मिक व ऐतिहासिक

परिचय

2.1 कालानुक्रमानुसार

2.2 धार्मिकता अनुसार

तृतीय अध्याय – भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों का अध्ययन

3.1 शुंग कालीन मूर्तिशिल्प

3.2 कुषाण कालीन मूर्तिशिल्प

3.3 गुप्तकालीन मूर्तिशिल्प

3.4 अन्य राजवंशों के मूर्तिशिल्प

चतुर्थ अध्याय – भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त संगीत वाद्‌ययंत्रों का अध्ययन

पंचम अध्याय – भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों का तकनीकी माध्यम एवं शैलीगत विवेचन

उपसंहार

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

Internet websites

चित्र सूची

चित्र फलक

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका – भूमिका के अंतर्गत भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों का परिचय दिया है।

प्रथम अध्याय– प्रथम अध्याय के अंतर्गत शोधार्थी ने भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों के ऐतिहासिक परिदृश्य को रखा है।

द्वितीय अध्याय– द्वितीय अध्याय के अंतर्गत शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत विभिन्न कलाकृतियां जैसे- लघु चित्र, मूर्तिशिल्प, मुद्राएं, हथियार तथा अन्य कलाकृतियों का परिचय प्रस्तुत करेगी।

तृतीय अध्याय– तृतीय अध्याय में शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत विभिन्न राजवंशों से प्राप्त जैसे- शुंग वंश कालीन, कुषाण वंश कालीन, गुप्त वंश कालीन मूर्तिशिल्पों का अध्ययन प्रस्तुत करेगी ।

चतुर्थ अध्याय– चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त संगीत वाद्य यंत्रों का अध्ययन प्रस्तुत करेगी।

पंचम अध्याय– पंचम अध्याय में शोधार्थी भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों का तकनीकी माध्यम एवं शैलीगत विवेचन प्रस्तुत करेगी।

उपसंहार– भरतपुर राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्प अपने कलात्मक सौंदर्य के लिए विख्यात है शोधार्थी उपसंहार के माध्यम से भरतपुर संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तिशिल्पों के महत्व और इनकी आधुनिक युग में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- उपाध्याय, वासुदेव 1982, प्राचीन भारतीय मूर्ति-विज्ञान चैखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- गोयल वीणा 2002, शिल्प रस निरूपण, परिमल पब्लिकेशन दिल्ली
- दास रायकृष्ण 1996, भारतीय मूर्तिकला, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी
- घोष, अमलानंद 1975, जैन कला एवं स्थापत्य, भाग 3, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
- चंद्रजोशी महेश 1995, युग युगीन भारतीय कला, राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर
- डॉ. गुप्ता,मोहनलाल 2016, राजस्थान में बौद्ध स्मारक तथा मूर्तियां, शुभदा प्रकाशन, जोधपुर
- प्रताप, रीता 2004, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर

- पवन, वीणा 1991, भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, ईस्टर्न बुक दिल्ली
- सिंह, अरविंद कुमार 2007, प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला पाषाण काल से गुप्त काल तक, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी

Bibliography —

- Atherton, Cynthia packert 1997, *The Sculpture of Early Medieval Rajasthan*,Brill Leiden
- Gupta, Mohanlal 2016, *Buddhist Monuments and statues*,Rajasthan, Shubhda Prakashan
- Quintanilla,Rhie Sonya 2007, *History of Early Stone Sculpture at Mathura, CA .150 BCE-100 CE,* Brill LEIDEN
- Shah Natubhai 1998, *Jainism the World of Conquerors*,Vol-1 Motilal Banarsidas Pvt
- Sharma, Brijendra nath 1975, *Iconography of Revanta*, Abhinav Publication
- Chishti,Dr,S.R.2016,*Compositions of The Great Tabla Maestros*, Kanishka Publishers,Distributors
- Sachs, *Curt The History of Musical Instruments*, J.M. Dent & Sons Ltd
- Verma, Sudhir Kumar,1999,*A Art of Tabla, Lalit Kala Prakashan*
- Kuppuswamy. Gowri, Hariharan.M, 2015, *Indian Music &Dance, Varied Dimensions*, B.R. Rhythms
- Iyer,Padma,2004, *History of Music*, Vishvabharti Publications, Daryaganj

Internet websites —

- https://indiasthan.com/place/rajasthan/8975/government-museum-bharatpur
- http://museumsrajasthan.gov.in/page/about-us
- https://www.indiantouristdestinations.com/Home/Details/Government%20Museum%20 Bharatpur/151
- https://books.google.co.in/books/about/Sculptures_from_the_Bharatpur_Museum_Bha .html?id=mj3mtAEACAAJ&redir_esc=y&hl=en
- https://www.alamy.com/stock-photo-statues-at-government-museum-bharatpur-rajasthan-india-83636188.html

- https://map.sahapedia.org/museum/Government-Museum,%20Bharatpur/1870
- https://www.holidify.com/places/bharatpur/government-museum-sightseeing-122915.html
- https://www.rajasthandirect.com/tourism/museums/bharatpur-government-museum
- https://www.tripadvisor.in/Attraction_Review-g303886-d2651167-Reviews-Goverment_
- https://www.tourmyindia.com/states/rajasthan/bharatpur-goverment-museum.html

परिशिष्ट-चित्र सूची

चित्र संख्या-1 उमा महेश्वर ,उत्तर गुप्त काल

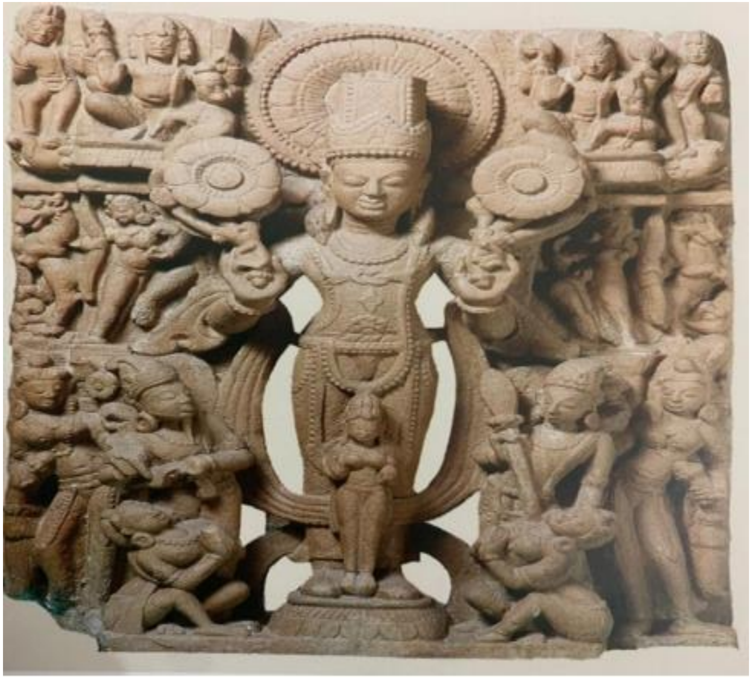

चित्र संख्या-2 हाथ में कमल लिए हुए सूर्य,10 वीं शताब्दी

चित्र संख्या-3 हाथ में शंख, चक्र, लिए हुए चक्रेश्वरी, कुषाण काल

चित्र संख्या- 4 हाथ में डमरु लिए नृत्य मुद्रा में शिव, 9-10 वीं शताब्दी